संस्थापित १८६७ ई.

आर्य मित्र

साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

आजीवन शुल्क ₹ १०००
वार्षिक शुल्क ₹ १००
(विदेश ५० डालर वार्षिक) एक प्रति ₹ २.००

● वर्ष : १२१ ● अंक : ६ व ७ ● ०६ व १६ फरवरी, २०१६ माघ शु.प्रतिपदा व माघ शु.नवमी (संयुक्तांक) सम्वत् २०७२ ● दयानन्दाब्द १६१ वेद व मानव सृष्टि सम्वत् : १६६०८५३११६

अयोध्या में पूर्वान्चल आर्य महासम्मेलन सम्पन्न

हजारों की संख्या में आर्य नर-नारियों ने भाग लिया

अगला आर्य महासम्मेलन बुन्देलखण्ड झांसी और फिर लखनऊ में होगा-देवेन्द्रपाल वर्मा

दो दिवसीय पूर्वान्चल आर्य महासम्मेलन दिनांक ६ व ७ फरवरी, २०१६ को श्री देवेन्द्रपाल वर्मा प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. की अध्यक्षता में एवं श्री नागेन्द्र कुमार शास्त्री प्रचार्य गुरूकुल महा विद्यालय अयोध्या के संयोजन में बड़े ही उल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। जिसमें प्रदेश के विभिन्न अंचलों से हजारों की संख्या में आर्य नर-नारियों ने भाग लिया।

दोनों दिन प्रातः ६ बजे से योग प्राणायाम, यज्ञ भजन व उच्च कोटि के विद्वानों विदुषियों के भजन व उपदेश हुये। योग और प्राणायाम का प्रशिक्षण डॉ. हरिसिंह एवं डॉ. विनोद कुमार योगाचार्य ने सम्पन्न कराया। राष्ट्र कल्याण यज्ञ के ब्रह्मा स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. थे। उन्होंने अपने प्रवचन में सभी के कल्याण के लिए वेदाध्ययन को अनिवार्य बताया।

यज्ञ के अनन्तर श्री देवेन्द्रपाल वर्मा प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. ने ओ३म् ध्वज फहराया गुरूकुल के ब्रह्मचारियों ने सम्मिलित स्वर में 'जयति ओ३म् ध्वज व्योम बिहारी' विश्व प्रेम प्रतिमा अति प्यारी' ध्वज गीत सस्वर गाकर सबका मन मोह लिया। प्रधान जी ने जन समूह को सम्बोधित कहते हुये कहा कि हम सभी वीत राग सन्यासी संस्कृत के उद्भव विद्वान स्वामी त्यागानन्द सवरस्वती द्वारा संस्थापित निःशुल्क गुरूकुल महाविद्यालय अयोध्या की तपोभूमि में आज पूर्वांचल आर्य महा सम्मेलन में भाग लेकर जीवन को धन्य कर रहे हैं। जब संस्कृत का अध्यापन केवल रटन्त भाषा के रूप में हो रहा था और वैदिक ज्ञान लुप्त हो रहा था वेद को लोग भूल गये थे तब महर्षि दयानन्द सरस्वती ने भारत भूमि में जन्म लेकर जन जन में वेद ज्ञान प्रचारित करके ढोंग पाखण्ड मुक्त देश बनाने, नारी जाति को पूर्ण सम्मान दिलाने और सम्पूर्ण मानव जाति को सुशिक्षित बनाने के लिए आर्य समाज की स्थापना की थी

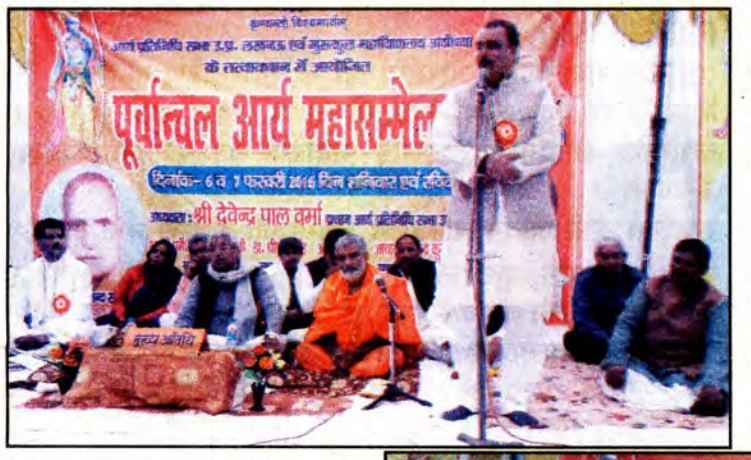

और उसे आन्दोलन नाम दिया था स्वराज्य आन्दोलन में ८०-८५ प्रतिशत आर्य नर-नारियों ने भाग लेकर देश को स्वतंत्र कराया अंग्रेजों ने भारत को सदैव गुलाम रखने की कुभावना से भारतीय शिक्षा विधि समाप्त कर दी हमारा सही इतिहास बदल डाला, आर्यों को विदेशी कहकर अपना शासन सदैव ही रखने की योजना बनाई थी। महर्षि दयानन्द ने अपनी सूक्ष्म दृष्टि से यह सब देखा और सभी बुराइयों ने मुक्त स्वाधीन भारत बनाने के लिए प्राचीन वैदिक गुरूकुलीय शिक्षा से सभी को प्रबुद्ध बनाने के लिए बालक बालिकाओं के पृथक प्रथक विद्यालय गुरूकुल खोलने की भावना समाज में भरी। अनेक गुरूकुलों की स्थापना होने लगी। जहां बालक बालिकायें गुरूजनों के अनुशासन में पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करते हुये शिक्षा स्नातक बने और देश के स्वाधीनता आन्दोलन में भाग लेकर देश को स्वतंत्र कराया। आजादी के बाद जिन नेताओं के हाथ में सत्ता आई उन्होंने देश के भौतिक विकास पर भी ध्यान केन्द्रित कर लिया शिक्षा वही पराधीन मस्तिष्क बनाने वाली चालू रखी फलतः आज युवा पीढ़ी अनुशासन हीन बन रही है। सभी तरह के दोष हमारे अन्दर फैल रहे हैं।

महर्षि दयानन्द ने उत्तम सुख

समृद्धि से पूर्ण राष्ट्र बनाने का सपना संजोया था। आर्य समाज की स्थापना का उनका उद्देश्य यही था। हमारे प्रदेश में भी ३५०० से अधिक आर्य समाजें कार्यरत हैं हमें सोचना अनिवार्य है कि फिर भी महर्षि का स्वप्न क्यों नहीं पूर्ण हो रहा। चिन्तन में पता चलेगा कि हम पूरी उमंग और उत्साह से आर्य समाज के सिद्धान्तों के प्रचार में नहीं लग रहे हैं जीवन में स्वार्थ परता बढ़ रही है। आज इस महा सम्मेलन में हम आत्म चिन्तन करें और महर्षि के सिद्धान्तों के प्रचार प्रसार में संगठित भाव से जुटने का संकल्प लें और महर्षि का स्वप्न साकार करें।

डॉ. प्रशस्य मित्र शास्त्री जो इसी गुरूकुल के स्नातक हैं वेद मंत्रों का सार तत्व भले ही लालित्य पूर्ण शैली में समझाया।

मा. श्री माता प्रसाद पाण्डेय अध्यक्ष विधान सभा ने दीप प्रज्ज्वलित करके वेद सम्मेलन का शुभारम्भ करते हुये कहा कि तथा कथित पंण्डितों ने वेद पढ़ने का सार्वजनिक अधिकार छीन लिया था यह अधिकार केवल पंडितों के हाथ में रखकर धर्म के नाम पर मनमानी निर्णय देकर जनमानस को भ्रम में डाल रहे थे। महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने प्रत्येक स्त्री पुरूष को वेद पढ़ने का अधिकार दिलाया।

गुरूकुल के प्राचार्य और पूर्वांचल आर्य महा सम्मेलन के संयोजक श्री नागेन्द्र कुमार शास्त्री ने अपने व्याख्यान द्वारा सरकार से मांग की कि पूर्वजों की सांस्कृतिक धरोहर की रक्षार्थ गुरूकुलों एवं संस्कृत विद्यालयों में शिक्षा रत छात्र छात्राओं के पठन-पाठन को दुरूस्त रखने के लिए छात्र छात्राओं को छात्रवृत्ति तथा शिक्षकों के वेतन में बढ़ोत्तरी की जाये। इस मांग का समर्थन श्री देवेन्द्रपाल वर्मा प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. ने भी किया।

विधानसभा अध्यक्ष श्री माता प्रसाद पाण्डेय ने सभी बातें गम्भीरता से सुनी और यथा सम्भव इन्हें पूर्ण कराने में सहायता करने को कहा। विधानसभा अध्यक्ष ने कहा कि आर्य समाज का देश की आजादी के आन्दोलन में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। महर्षि दयानन्द ने नारी उत्थान शिक्षा उत्थान में अपना पूरा जीवन ही समर्पित कर दिया था।

कार्यक्रम के दूसरे दिन माननीय श्री तेज नारायण पाण्डेय वन राज्य मंत्री उ.प्र. शासन ने कहा कि आज मुझे इस मंच पर बुलाकर जो सम्मान मिला इससे पता लगा कि आर्य समाज ही वैदिक धर्म के सिद्धान्तों को सही मायने में चला रहा है।

श्रीमती शशि शर्मा पूर्व विधायिका कुशी नगर ने भी अपने भाषण में आर्य समाज के कार्यों की सराहना की।

डॉ. धीरज सिंह कोषाध्यक्ष ने कहा कि हम आर्य सम्मेलनों की व्यवस्था प्रचार प्रसार में कोई कमी नहीं आने देंगे।

इस महा सम्मेलन में वेद सम्मेलन में गौरक्षा सम्मेलन, मद्य निषेध एवं राष्ट्र रक्षा सम्मेलन भी सम्पन्न हुये। विभिन्न विद्वानों ने गौरक्षा की अनिवार्यता पर बल दिया। दिल्ली में भी गौरक्षा आन्दोलन हेतु कार्यक्रम आयोजित किया गया था। इस महा सम्मेलन में प्रदेश के सभी अंचलों से आर्य नर-नारियों ने भारी संख्या में भाग लेकर सम्मेलन को सफल बनाया। सम्मेलन में विख्यात भजनोपदेशिका श्रीमती सुदेश आर्या दिल्ली, योगेश दत्त बिजनौर, कड़क देव, आशा आर्या एवं तेजपाल आर्य के भी सुमधुर भजनों का श्रोताओं ने लाभ उठाया।

सभा प्रधान श्री देवेन्द्रपाल वर्मा ने मंच से घोषणा की कि वर्ष २०१६ में एक सम्मेलन बुन्देलखण्ड आर्य महासम्मेलन झांसी में होगा। तथा अक्टूबर व नवम्बर में विशाल प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन प्रदेश की राजधानी लखनऊ में सम्पन्न होगा। जिसकी तैयारी में अभी से सभी जुट जायें।

७ फरवरी को सम्मेलन रात्रि ६:३० बजे शान्ति पाठ के साथ सम्पन्न हुआ।

देवेन्द्रपाल वर्मा
प्रधान/संरक्षक

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री/प्रधान सम्पादक

आचार्य वेदव्रत अवस्थी
सम्पादक

सम्पादकीय.....

मानव निर्माण के लिए आर्य समाज के सिद्धान्त संजीवनी बूटी है।

आज स्वार्थ में अन्धे होकर तमाम लोग मानवता का विनाश करने में लगे हुये हैं। धार्मिक क्षेत्र हो या सामाजिक क्षेत्र हो चाहे राजनीतिक क्षेत्र हो सभी क्षेत्रों में स्वार्थपरता हावी हो रही है। फलतः मानवता का क्षरण हो रहा है और देशोन्नति में घातक बन रहा है। कभी हमारा देश विश्व गुरू था, धनधान्य से सर्वाधिक सम्पन्न था इस देश को सोने की चिड़िया कहा जाता था। हमारे धन धान्य को लूटने की नियत से पहले यवन आक्रमणकारियों ने हमें लूटा हमें पराधीन बनाया फिर अंग्रेज लुटेरों ने हमारे देश पर कुटिल नीति से व्यापारी बनकर यहां आये हमारे व्यापार को विनष्ट किया अपना व्यापार फैलाया और बड़ी ही चालाकी से हमारी शिक्षा व्यवस्था बदल डाली। हमारा प्राचीन इतिहास बदल कर गलत इतिहास बनाकर विश्व में हमें विदेशी कहने का षड़यन्त्र रचा। शिक्षा ऐसी चलाई जिसे पढ़कर मानव केवल रोटी रोजी के इन्तजाम में लगा रहे राष्ट्रोन्नति समाजोन्नति के कार्य करने की सोच का अवसर ही उसे न मिले। शिक्षा का मूल समाप्त करके डिग्री को घर परिवार की समृद्धि के लिए अनिवार्य कर डाला।

आज ऊंची से ऊंची डिग्रियां लोगों के पास हैं परन्तु माननीय गुणों का सर्वथा अभाव होता जा रहा है। नैतिक चरित्र समाप्त प्राय है। आज की युवा पीढ़ी अब दिग्भ्रमित होकर केवल धन पैदा करने की ओर बढ़ रही है। उसके लिए उचितानुचित का विवेचन समाप्त हो रहा है। बड़े छोटे के प्रति व्यवहार कैसा हो इसका विवेचन रह ही नहीं गया।

महर्षि दयानन्द सरस्वती का प्रादुर्भाव पराधीन भारत में हुआ था देश की पराधीनता के मूल में अशिक्षा, नारी शोषण ढोंग पाखण्ड जाति-पांति के विभेद को देखा और इन सब दोषों से मुक्त स्वतंत्र सुखी भारत बनाने की भावना से आर्य समाज की स्थापना की थी। आर्य समाज के कुछ नियम निर्धारित किये जिनका अनुपालन करके प्रत्येक व्यक्ति अपने को सच्चा आर्य बनाकर देशको स्वाधीन सुखी समृद्ध सुगठित रखने में समान रूप से मार्गदायी बने आर्य समाज का प्रचार तीव्रगति से चला जन जन में चेतना आने लगी आजादी की ललक जगी। स्वराज्य आन्दोलन तीव्रगति से चला 80 प्रतिशत से अधिक आर्य नर-नारियों ने स्वराज्य आन्दोलन में भाग लेकर देश को स्वतंत्र बनाया अपनी सरकार बनी अपना संविधान बना, संविधान में महर्षि दयानन्द के सभी मन्तव्य समाहित किये गये। महर्षि दयानन्द ने प्रजातंत्रीय शासन प्रणाली को देश हितार्थ बताया। जिसमें राजा और प्रजा सभी एक दूसरे के पूरक बनकर देश को खुशहाल बनायें।

आज हमारे देश में प्रजातंत्र पर्याय के रूप में लोकतंत्र की स्थापना मानी जाती है। प्रजातंत्र का अर्थ है प्रकृष्ट ज्ञानवान लागों के सहयोग न शासन चलाया जाये। परन्तु लोकतंत्र का अर्थ जन सामान्य का सहयोग। दोनों शब्दों के मूल अर्थ के ज्ञान के अभाव में आज किसी तरह धन बल जन बल के बल पर सत्ता की कुर्सी पर पहुंचने का उद्योग पनप रहा है फलतः सुशासन का अभाव हो रहा है। लोग वोट के बलपर लोक सभा व विधान सभाओं में आज कई कार्य बाधित होते हैं। जिससे देश का लाखों रूपया व्यर्थ में नष्ट होता है और कार्य अवरूद्ध होते हैं।

अतः देश के सभी प्रबुद्ध नागरिकों बुद्धिजीवियों, शिक्षा शास्त्रियों राजनीतिज्ञों का दायित्व है कि इन अवरोधक कार्यों में सुधार लाने और देश को उन्नति के शिखर पर ले जाने के लिए गम्भीर चिन्तन करें। मेरी दृष्टि में जब तक विदेशी शिक्षा हटाकर स्वदेशी शिक्षा का पाठ्यक्रम नहीं चलाया जायेगा तब तक सुधार असम्भव है। हमारी प्राचीन शिक्षा में प्रारम्भ से ही चरित्र निर्माण का पाठ पढ़ाया जाता है जिसमें चरित्र का सुनिर्माण होता है। जो इस शिक्षा में नहीं है

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द ने मानव जीवन निर्माण के लिए आर्य समाज के दस नियमों में मानव जीवन निर्माण की संजीवनी बूटी हमें दी है। हमें समाज को उन्नति के शिखरपर ले जानेके लिए आर्य समाज के सिद्धान्तों के प्रचार प्रसार में एक जुट होकर लग जाना चाहिए। जबहम ऐसा निश्चय करके कार्य क्षेत्र में अपना निस्पृह योगदान देने को प्रस्तुत होंगे तो निश्चय ही हमारा उत्तम जीवन समाज में प्रकाश की किरणें फैलायेगा। हमारे समाज की दिशा सुधार की ओर बदलेगी। फिर देश से बुराइयां नष्ट होंगी और हम सभी सच्चे आर्य बनकर सारे विश्व को आर्य बनाने के उद्देश्य मेंसफल होंगे।

-सम्पादक

मेला चांदापुर विषयक जिज्ञासा

- भावेश मेरजा

परोपकारी पाक्षिक के अक्टूबर (द्वितीय) २०१५ अंक में प्राध्यापक श्री राजेन्द्र जी जिज्ञासु ने अपने लेख में लिखा है - ''मुसलमानों ने ऋषि के सामने प्रस्ताव रखा कि हम और आप दोनों मिलकर गोरे पादरियों से टक्कर लें। परस्पर की बातचीत फिर हो जायेगी, पहले इनको हराया जाये। (पृष्ट १३)

उपर्युक्त बात पढ़कर ऋषि दयानन्द के प्रमुख - प्रामाणिक जीवन चरित्र में दिया गया मेला चांदापुर का वृत्तान्त पढ़ने का मन हुआ। उनमें इस सम्बन्ध में निम्नलिखित विवरण पाया -

(१) पण्डित लेखराम जी संगृहीत स्वामी जी के जीवन चरित्र में लिखा है - ''प्रथम कुछ सज्जनों ने स्वामी जी के डेरे पर जाकर यह कहा कि हिन्दू और मुसलमान मिलकर पादरियों के मत का खण्डन करें। (पृष्ठ २६६, २००७ ई० संस्करण)

(२) पण्डित लक्ष्मण जी लिखित स्वामी जी के सम्पूर्ण जीवन चरित्र (कि जिसे स्वयं श्री जिज्ञासु जी ने अनूदित एवं सम्पादित किया है) में लिखा है - कई लोगों ने स्वामी जी के पास जाकर कहा कि आर्य और मुसलमान मिलके ईसाइयों का खण्डन करें तो अच्छा है। (भाग १, पृष्ट ४८२ प्रथम संस्करण २०१२ ई०)

(३) बाबू देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय जी संगृहीत स्वामी जी के जीवन चरित में लिखा है - कुछ लोग स्वामी जी के डेरे पर गये और यह प्रस्ताव किया कि हिन्दू और मुसलमान मिलकर ईसाइयों का खण्डन करें। (पृष्ठ ३५५, वि० सं० २०५० संस्करण)

(४) श्री हरबिलास सारडा जी कृत स्वामी जी के अंग्रेजी जीवन चरित्र में लिखा है-

On the 19th March, Some people went to Swamiji and suggested that the Hindus and Muslims should unite to refulte Christianity. Swamiji said rather, all should meet together in love to find out the truth wihtout prejudice and without attacking any one. (Life of Dayanand Saraswati, page 167, Edition 1946)

(५) डा० भवानीलाल भारतीय जी ने नवजागरण के पुरोधा दयानन्द सरस्वती के पृष्ठ २८४ पर लिखा है कि कुछ लोगों ने स्वामी जी के निकट आकर यह प्रस्ताव किया कि हिन्दू और मुसलमान धर्माचार्यों को मिलकर ईसाई पादरियों को पराजित करना चाहिए। (पृष्ठ २८४, १८८३ ई० संस्करण)।

उपर्युक्त सभी जीवन चरित्रों में स्वामी जी से उस बात कहने वालों ले लिए - कुछ सज्जनों, कई लोगों कुछ लोग, कुछ लोगों some people इत्यादि ही लिखा है। मुसलमानों ने यह बात स्वामी जी से कही, ऐसा तो किसी ने नहीं लिखा है।

अतः जिज्ञासा यह है कि जिन लोगों ने स्वामी जी के समक्ष उपर्युक्त प्रस्ताव रखा था, वे सब मुसलमान थे - ऐसा प्रा० राजेन्द्र जिज्ञासु जी ने किस ऐतिहासिक प्रमाण के आधार पर लिखा है ? श्री जिज्ञासु जी ने अपने इस विवेच्य लेख में दूसरी बात यह लिखी है कि - महर्षि ने कहा कि सत्य न स्वदेशी है न विदेशी होता है। स्वामी जी का यह कथन भी उपर्युक्त किसी भी जीवन चरित्र के मेला चांदापुर विषयक प्रकरण में पढ़ने को नही मिला। मान्य जिज्ञासु जी ने यह कथन किस ग्रन्थ में से लेकर अपने इस लेख में उद्धृत किया है, यह पता नहीं चला।

-८/१७, टाउनशिप पो. नर्मदानगर जिला-भरूच, गुजरात

स्वास्थ्य चर्चा-

खून की कमी दूर करता है अनार का जूस

आजकल के लाइफ स्टाइल के चलते, लोग हेल्दी फूड्स से ज्यादा पैकेज्ड फूड खाते हैं। ऐसे में उन्हें जल्द ही संक्रमण हो जाते हैं या फिर बीमारियां घेर लेती है। आजकल लोगों में एनीमिया यानी खून की कमी की दिक्कत बहुत देखी जा रही है। ऐसा महिलाओं के साथ तो बहुत ज्यादा होता है, लेकिन इसका आसान उपाय छिपा है अनार के दानों में।

अनार के दाने दिखने में जितने खूबसूरत होते हैं, खाने में उतने स्वादिष्ट भी, लेकिन अनार छीलकर खाने की बात पर हम सब आलसी हो जाती हैं। अनार के आयुर्वेदिक गुणों पर दुनिया भर के वैज्ञानिक कई तरह की रिसर्च कर रहे हैं। अनार हमारे देश के लगभग सभी राज्यों में उगाया जाता है और बड़े चाव से खाया जाता है।

पारंपरिक तौर पर देसी नुस्खों में अनार कई तरह के रोगों में उपचारों में इस्तेमाल किया जाता है। अनार के कई तरह के रोचक गुणों के बारे में जानकर आप भी अनार को अपने खानपान का एक अहम, हिस्सा बना लेंगे और साथ ही आलस छोड़कर इसे छीलने में देरी भी नहीं करेंगे, क्योंकि न सिर्फ इसके दानों के साथ इसके छिलकों में भी कई तरह के फायदे छिपे हुए हैं।

खून की कमी नहीं होती है – ऐसा माना जाता है कि अनार के सेवन से शरीर में खून की कमी दूर हो जाती है और इसी वजह से वह हृदय के लिए भी बहुत लाभदायक होता है। प्रतिदिन एक गिलास अनार का जूस पीने से सेहत अच्छी रहती है।

वजन कम करने में फायदेमंद– अनार का जूस शरीर में इंसुलिन की मात्रा को प्रभावित किए बगैर इंसान का वजन कम करने में मदद करता है। खाली पेट प्रतिदिन अनार का जूस पीने से फैटी सेल्स का बनना कम होने लगता है और धीरे-धीरे वजन कम हो जाता है।

गर्भ में शिशु की सेहत के लिए फायदेमंद, आर्थराइटिस में आराम कैंसर से बचाता है, मुंह के रोगों से छुटकारा दिलाता है, खून की कमी नहीं होने देता, पुरुषों के लिए फायदेमंद होता है।

अनार का जूस कार्डियों वैस्कुलर सिस्टम को बेहतर बनाता है। यानी यह ब्रेन की सेहत के लिए बेहतरीन होता है। माना जाता है कि ब्रेन से जुड़ी समस्याओं से ग्रस्त रोगियों को अनार का जूस जरूर पीते रहना चाहिए। अनेक रिसर्च से पता चलता है कि मां के गर्भ में पल रहे बच्चे की बेहतर सेहत के लिए अनार का जूस बहुत फायदेमंद होता है। माना जाता है कि नाल में श्वसन क्रिया के दौरान कभी-कभी होने वाले तनाव को रोकने में भी यह मददगार होता है।

आर्थराइटिस में आराम मिलता है–

जोड़ दर्द या आर्थरायटिस से ग्रस्त रोगियों के लिए अनार का जूस वरदान की तरह है, रोगियों को दिन में एक बार कम से कम ७५ से १०० मिली अनार का जूस जरूर पीना चाहिए। इससे काफी आराम मिलता है।

आर्य समाज के युवा अधिकारी-राजीव जी आर्य

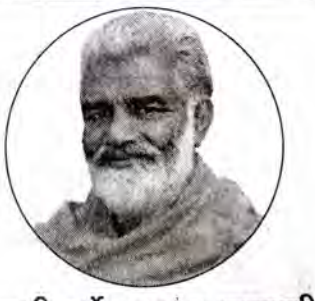

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा
उ.प्र., लखनऊ।

अभी पिछले दिनों ब्र० राजसिंह आचार्य जी की सूचना से आर्यजगत हतप्रभ था- दिल्ली सभा एवं आर्य वीरदल अपने को सम्भाल नहीं पाया था तभी अचानक यह सूचंना अत्यन्त कष्टदायक सुनने को मिली कि आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के महामंत्री राजीव जी आर्य एक सड़क दुर्घटना के शिकार हो गए। अभी २५ दिसम्बर की तैयारी कर रहे थे स्थान-स्थान पर बैठक लेते रहना और उसकी तैयारी करना पिछले कई वर्षों से उनकी दिनचर्या में सम्मिलित हो गया था वे आर्य समाज के लिए समर्पित व्यक्तित्व थे कर्मठता के धनी, उत्साह और प्रसन्नता से आर्य समाज के कार्य को ''अहर्निशि सेवामेह'' की भावना से करने में अपना सौभाग्य समझते थे ऐसे उदारमना अधिकारी का अपने बीच से अचानक जाना असहन होता है ऐसी दुःखद दुर्घटना सुनने वाले प्रत्येक आत्मीय जन को उद्वेलित कर देती है जो राजीव जी आर्य के साथ जुड़कर सभी आर्यो के लिए आध्यात्मिक दुःख का कारण बन गई है।

राजीव जी आर्य सच्चे अर्थों में आर्य थे उनके स्वास्थ्य में पिछले वर्ष विकृति आने से भी चिन्तायें बढ़ गई थीं लेकिन जब स्थापना दिवस पर स्वस्थ होकर आये तो आर्य जगत में अपार प्रसन्नता का वातावरण बना था मैं उस कार्यक्रम का साक्षी हूँ जब लोगों ने उन्हें आत्मीयभाव से स्नेह - आशीष दिया था और उनका मनोबल बढ़ाया था उनके जीवन की शतायु की प्रार्थना की थी लेकिन प्रभु इच्छा बलीयसि '' सभी को स्वीकार करनी पड़ती है। मेरा व्यक्तिगत परिचय उनसे कई वर्ष पूर्व हो गया था आर्य समाज पंजाबी बाग से आपका सम्बन्ध रहा है मुझे एक कार्यक्रम में आने का सौभाग्य मिला था आर्य समाज पश्चिम विहार में भी आपके दर्शन कई बार हुए और मैंने आपसे गुरूकुल पूठ आने का निमन्त्रण दिया। तभी आप अपने कुछ साथियों के साथ गुरूकुल पूठ आये थे और अत्यन्त प्रसन्नता अनुभव की थी, आपकी इच्छा थी कि एक सुन्दर गौशाला का निर्माण किया जाये उसी के लिए उन्हें स्थान की आवश्यकता थी गुरूकुल पूठ स्थान उन्हें अच्छा लगा गुरूकुल के अध्यक्ष श्री सत्यानन्द जी आर्य जो आर्य समाज पंजाबी बाग से जुड़े है उनका भी सत्प्रयास रहता है कि गुरूकुल पूठ में कोई नया कार्य हो उन्हीं के प्रयास से ऐसा वातावरण बन रहा था लेकिन अचानक इस घटना से सब सपने अधूरे रह गए। आपकी मन्द-मन्द मुस्कान, आत्मीयता से परिपूर्ण मधुरवाणी सरल सात्विक और विनोदी स्वभाव जब अचानक याद आता है तभी आपकी स्मृतियों ताजी हो जाती है आपके अन्दर महापुरुष जैसे सभी गुण विद्यमान थे ।

विपदिधैर्यमभ्युदये क्षमा, सक्षस वाक्पटुता युधिविक्रमः।

यशसि चाभिरूचि व्यंसनं श्रुतो, प्रकृति सिद्ध मिदं हि महात्मनाम।।

जो विपत्ति के समय धैर्य धारण करते हैं आप गतवर्ष कैंसर से पीडित हुए लेकिन धैर्य को नहीं छोड़ा परिणाम स्वरूप आपने पुनः पूर्ण स्वास्थ्य प्राप्त कर लिया, उन्नति पाकर जो क्षमा करने में उदारता का प्रयोग करते हैं कई संस्थाओं के अधिकारी बनकर कर्मचारियों के प्रति विनम्रता और कार्यकुशलता छोटी मोटी त्रुटि होने पर भविष्य के लिए सावधानी याद दिलाना जैसे इनकी दिनचर्या का अंग बन गया था, सभा में बोलने की प्रवीणता, यह गुण आपमें सदैव विद्यमान रहा बड़ी से बड़ी सभाओं का संचालन करने की निपुणता आपमें स्वाभाविक रूप में विद्यमान थी। युद्ध में पराक्रम दिखाना युद्ध शास्त्रार्थ का हो अथवा शस्त्रार्थ का हो वे दोनों में ही पारंगत थे क्योंकि आपने सत्संग-सेवा - स्वाध्याय - संयम - संस्कार से अपने आपको परिमार्जित कर लिया था। प्रशंसा प्रिय कभी नहीं रहे सदैव प्रशंसा से पीछे हट जाते थे वेदादि सदग्रन्थों के स्वाध्याय के प्रति आपका अध्यवसाय था इस प्रकार आपकी दिनचर्या आपके मृदु व्यवहार एवं आपके शुभ संस्कारों से आप महान् पुरुषों की श्रेणी में आते है। ''क्षणं ज्वलनं श्रेयं न च घूमातिं चिरम्'' थोड़ी देर के लिए प्रकाशित होकर यदि किसी के मार्गदर्शक जो बनता है वह श्रेयस्कर है लम्बे समय तक जलते हुए धुआँ करके आँखों में आँसू बहाने वाला अच्छा नहीं है अर्थात् थोड़ी आयुपाकर किसी के काम आने वाला व्यक्ति समाज के लिए हितकारी होता है और लम्बी आयु पाकर झगड़े कराना आपस में मतभेद कराना जीवन जीने का कोई औचित्य नहीं है ऐसे राजीव जी थोड़ी सी आयु में सबके लिए आत्मीय बन गए वे भले ही सन्यासी, ब्रह्मचारी, विद्वान, योगी नही थे फिर भी अपनी सेवा एवं मृदु व्यवहार से सभी के मन को जीत लेने की क्षमता आपमें विद्यमान थी यदि आपको कोई अपनी आर्य समाज में आमन्त्रित करते थे तो मंच पर नहीं नीचे ही आकर बैठते थे,और कहते थे कि मैं विद्वान नहीं 'मंच विद्वानों के लिए होते हैं मैं तो एक सामान्य कार्यकर्त्ता एवं आर्य समाज का सेवक हूँ तभी तो लोगों ने आपको महामंत्री जैसे बड़े पद पर प्रतिष्ठित करके सम्मानित किया था। महाभारत में आता है जब राजसूय यज्ञ हुआ तो श्री कृष्ण जी ने विद्वानों की सेवा उनके भोजन से पूर्व पादप्रक्षालन एवं पत्तले उठाने का कार्य लिया था योग्य विद्वान होकर इतनी (जूठे पात्र उठाकर) नम्रता का परिचय दिया तभी तो यज्ञोपरान्त पूर्णाहुति पर पूरे कार्यक्रम का सर्वोच्च सम्मान किसे दिया जाये अर्थात् जैसे आज खेल में कहा जाता है कि '' मैन ऑफ दा मैच'' कौन रहेगा उसी प्रकार सर्वोच्च सम्मान श्री भीष्म पितामह ने श्रीकृष्ण जी को दिया था और उनकी प्रशंसा की थी इसी प्रकार दिल्ली में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की पूर्णता में यज्ञशाला निर्माण एवं यज्ञ व्यवस्था की सारी देखरेख श्री राजीव जी आर्य के हाथ में थी विद्वान आयेगें बाहर पांव धोने की व्यवस्था अन्दर बैठने की व्यवस्था प्रसाद व्यवस्था तथा किसको कहां आसन देकर सम्मानित करना है यह वे अच्छी प्रकार से जानते थे और उन्होंने उसे व्यवस्थित किया इतने बड़े कार्यक्रम में यज्ञशाला छोटी होने पर भी अव्यवस्था नहीं रही यह उनकी कार्यकुशलता का ही सुपरिणाम था अतः उन्हें ही श्रीकृष्ण जी की तरह वह सम्मान प्राप्त हुआ जिसके वे सर्वथा योग्य थे। गुरूकुल पूठ के अध्यक्ष श्री सत्यानन्द जी आर्य के आप बायाँ हाथ थे आप विद्यालय की व्यवस्था हो अथवा आर्य समाज पंजाबी बाग का सम्मेलन अथवा साप्ताहिक सत्संग हो इनके ऊपर सभी अधिकारी निश्चिन्त रहते थे। आप आकाश में चन्द्रमा की तरह आर्य समाज की शोभा थे शीतल थे निष्कलंक थे आकाश रूपी आर्यसमाज में बहुत नक्षत्र रूपी आर्य हैं लेकिन आप अपनी चमक से सभी में चमक (प्रकाश) गति पैदा करके उत्साहित किया करते थे आप सूर्य की तरह तेजस्वी थे, आप पृथिवी की तरह धैर्यशाली थे आप जल की तरह प्रवाहमान एवं जीवन देने वाले थे आप सदैव परोपकार प्रिय होकर जीवन को देवत्व की ओर ले जाने वाले थे। इतनी सारी विशेषताओं के पश्चात चन्द्रमा में एक (कमी) न्यूनता दाग के रूप में है उसी प्रकार आपकी आयु कम रही यही पूरे आर्यजगत् के लिए कष्टदायी हो रही है। गुरूकुल पूठ परिवार आपकी स्मृतियों को बराबर याद करता रहता है आज सभी कुलवासी शोकाकुल हैं शान्तियंज्ञ एवं मौनश्रद्धांजली देकर आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली, आर्यसमाज पंजाबी बाग सहित सभी संस्थायें जहां वे जुड़े थे तथा आत्मीय परिवार के सभी आबाल वृद्ध के प्रति मैं सहानुभूति पूर्वक इनकी दुःख की घड़ी में अपनी सहभागिता प्रकट करता हूँ तथा आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० लखनऊ, आर्यमित्र परिवार की ओर से अपनी हार्दिक श्रद्धांजली अर्पित करता हूँ।

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री
आर्य प्रतिनिधि सभा, उ.प्र.
संचालक-गुरूकुल पूठ, हापुड़

सेक्युलरिज्म का पाखण्ड

-सूर्यदेव चौधरी

पंथ-निरपेक्षता का मतलब है, कानून स्वार्थ सम होगा।
नहीं किसी को अधिक-विशेष, नहीं किसी को कम होगा।।१।।
इसीलिए पंथ-निरपेक्ष कहा जाता अपना भारत देश है।
पर भारत की सरकार नहीं रही कभी भी निरपेक्ष है।।२।।
थोक वोटों की लालच में अल्पसंख्यकों को विशेषाधिकार हैं।
आयोग, मंत्रालय, बजट, सच्चर समिति उनके ही विस्तार हैं।।३।।
कहीं है विशेष छात्रवृत्ति उन्हें, हज सब्सिडी से भी वे युक्त हैं।
मन्दिरों पर सरकारी जंजीर, पर चर्च-मस्जिद तो मुक्त हैं।।४।।
मानसरोवर की यात्रा पर विदेशी यात्रा का कर लगता है।
पर मक्का मदीना का हज सरकारी सब्सिडी पर चलता है।।५।।
वंदे मातरम् कहने वालों को साम्प्रदायिक बताया जाता है।
भारत माँ को डायन कहने वालों को ताज पहनाया जाता है।।६।।
तथा कथित मस्जिद विध्वंस पर तो वे हाय तोबा मचाते हैं।
गोधरा में जीवित-हिन्दू-दाह पर वे मौन ही रह जाते हैं।।७।।
देश-व्यापी सिक्खों के हत्यारे, पंथ-निरपेक्ष कहलाते हैं।
गुजरात के क्षेत्रीय दंगे पर, बेशर्मी से शोर मचाते हैं।।८।।
अपने ही देश कश्मीर में, हिन्दू हो गए अब समाप्त हैं।
बचे हुए जन जम्मू में घोर नारकीयता को प्राप्त हैं।।९।।
पाकिस्तान में हर साल षड़यंत्र में हिन्दू घटाए जाते हैं।
पड़ोसी बंगलादेश में भी हरदम हिन्दू सताए जाते हैं।।१०।।
फिर भी हिन्दुओं पर ही सरकार के कानूनी डंडे चलते हैं।
सेक्युलरिस्टों के संरक्षण में आतंकी फूलते फलते हैं।।११।।
जारी रहा यदि सेक्युलरिज्म का यह राजनीतिक पाखंड।
क्षीण होगी देश की एकता, भारत होगा फिर खंड-खंड।।१२।।
निजी आपसी मतभेदों को मूल, हिन्दुओं तुम संघर्ष करो।
और इस भेद-भाव के शासन से मुक्त भारतवर्ष करो।।१३।।
एकं सत् विप्राः बहुधा वदन्ति, नेतृत्व का आचार होगा।
सर्वे भवन्तु सुखिनः, शासन का सुदृढ़ आधार होगा।।१४।।
इस समभाव के शासन से, सबका सम-उत्कर्ष होगा।

अयोध्या में पूर्वान्चल आर्य म

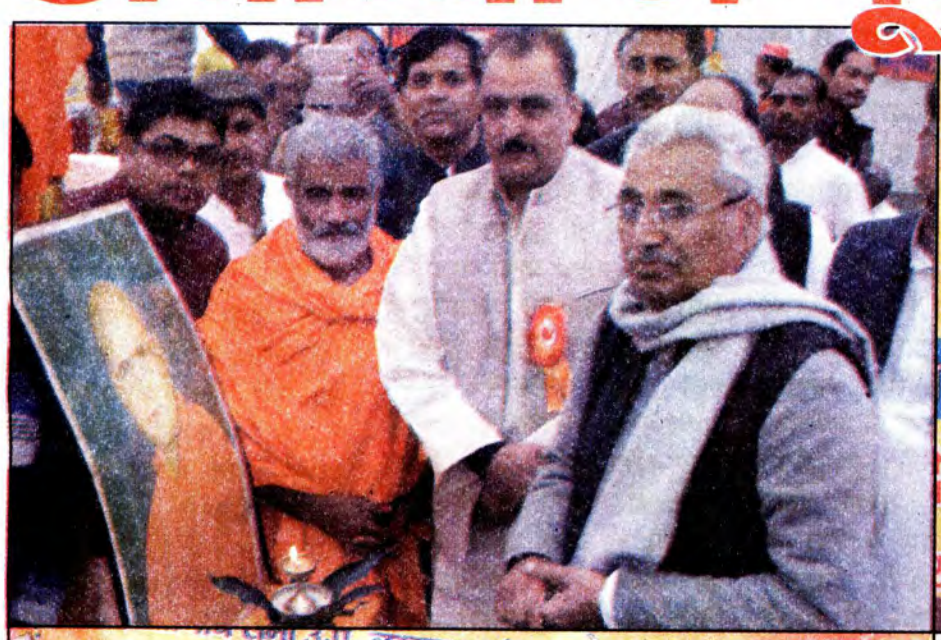

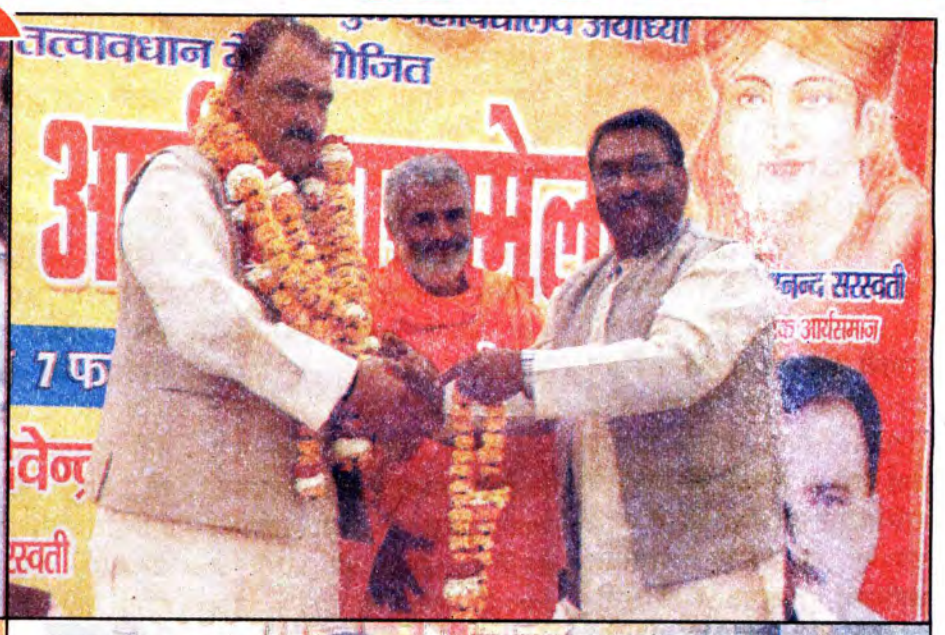

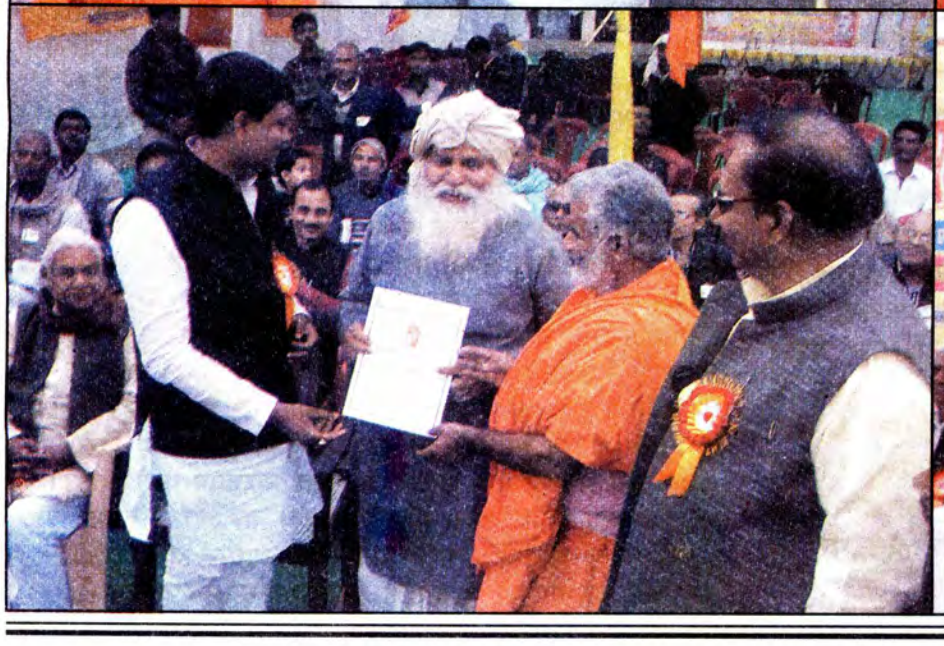

हासम्मेलन के कतिपय चित्र

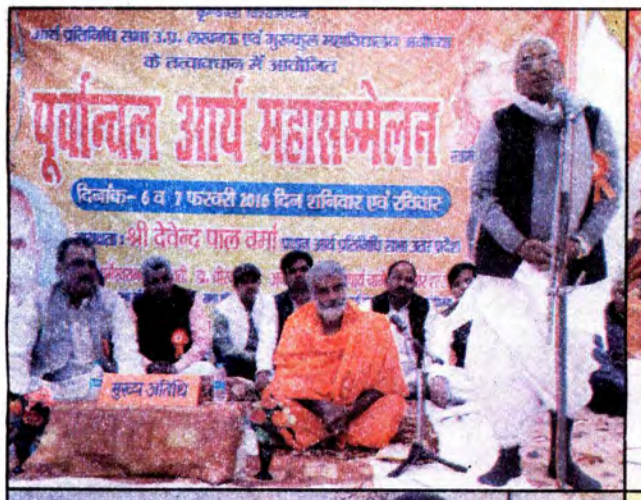

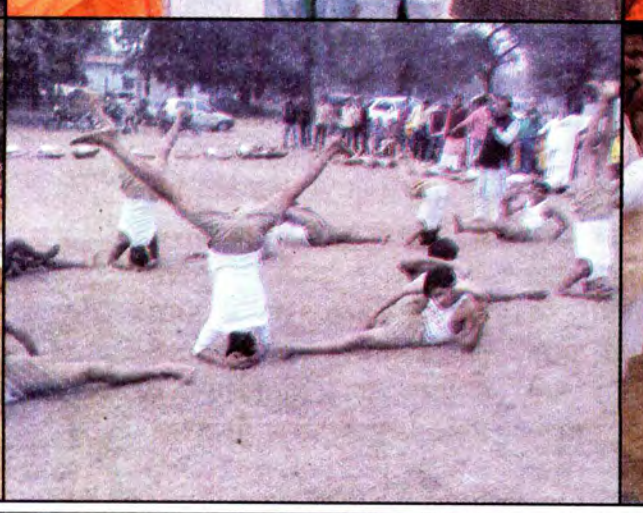

वेद आर्य समाज और गणतन्त्र प्रणाली

मनमोहन कुमार आर्य,
देहरादून।

भारत का इतिहास उतना ही पुराना है जितना कि इस सृष्टि के बनने के बाद प्राणी जगत व मानव उत्पत्ति के बाद का सृष्टि का इतिहास। सभी मनुष्यों को नियम में रखने व सभी श्रेष्ठ आचरण करने वाले मनुष्यों को अच्छा भयमुक्त व सद्ज्ञानपूर्ण वैदिक परम्पराओं के अनुरूप वातावरण देने के लिए एक आदर्श राजव्यवस्था की आवश्यकता एवं उपयोगिता स्वयंसिद्ध है। वैदिक मान्यताओं के अनुसार इस सृष्टि में मानव उत्पत्ति का इतिहास १ अरब ६६ करोड़ ८ लाख ५३ हजार ११५ वर्ष पूर्व आरम्भ होकर वर्तमान समय तक चला आया है। १५ अगस्त १९४७ को अंग्रेजी की दासता से स्वतंत्र होने से पूर्व भी इस देश में अगणित राजा हुए जिन्होंने देश पर राज किया और राज्य के संचालन के लिए उनके अपने संविधान, नियम व सिद्धान्त भी रहे हैं। वैदिक साहित्य का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि महाभारत काल में उसके बाद के भारत के आर्य राजाओं के संविधान वेद सम्मत नियमों व प्रक्षेप रहित मनुस्मृति के विधान हुआ करते थे। अभाग्योदय से प्राचीन भारत में वर्तमान समय से लगभग ५,२०० वर्ष पूर्व महाभारत का विनाशकारी युद्ध हुआ जिसमें लाखों की संख्या में लोग मारे गये। इस युद्ध के परिणामस्वरूप देश की शैक्षिक, सामाजिक व प्रशासनिक व्यवस्था पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा जिससे ज्ञान व विज्ञान का ह्रास होकर समाज में अन्धविश्वास, सामाजिक विषमता व लोगों का चारित्रिक पतन आदि देखने को मिलता है। इन कारणों से देश पहले मुगलों वा यवनों का और उसके बाद अंग्रेजों का दास बन गया। मुगलों व अंग्रेजों की दासता के समय में भी अनेक आर्य व हिन्दू राजाओं ने विदेशी विधर्मी शासकों का पुरजोर विरोध किया। महाराणा प्रताप, वीर शिवाजी, गुरू गोविन्द सिंह जी आदि हमारे ऐसे ही पूर्वजों में थे जिन्होंने देश की स्वतन्त्रता व सुशासन के लिए अपना उल्लेखनीय योगदान किया।

वेद व वैदिक ज्ञान सत्य व न्याय पर आधारित राज्य का समर्थक व पोषक है। वेदों ने मनुष्यों को यह बताया है कि इस जगत में ईश्वर, जीव व प्रकृति यह तीन मुख्य व प्रमुख तत्व हैं। ईश्वर व जीव चेतन तत्व वा पदार्थ हैं तथा प्रकृति इनके विपरीत जड़ है। ईश्वर निराकार, सर्वव्यापक व सर्वज्ञ है तथा जीव अल्पज्ञ, एकदेशी व ससीम है। ईश्वर सृष्टि का निमित्त कारण तथा प्रकृति उपादान कारण हैं जीव संख्या में अनन्त हैं व ईश्वर केवल एकमात्र व केवल एक सत्ता है। इन्हीं जीवों के पूर्वजन्म के कर्मों के फल रूपी सुख व दुःख के भोग के लिए ईश्वर ने इस सृष्टि को बनाया है जिससे कि ईश्वर की सामर्थ्य का उपयोग हो सके और जीवों को मानव आदि शरीरों की प्राप्ति के साथ कर्मानुसार सुख व दुःख मिल सके। मनुष्य जीवन का उद्देश्य पूर्व जन्मों के अवशिष्ट कर्मों के फलों का भोग करते हुए ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना व उपासना व सभी वेद विहित कर्मो को करना जिससे दुःखों की पूर्णतया निवृत्ति होकर मोक्ष की प्राप्ति हो सके। मनुष्य वा उसकी जीवात्मा को मोक्ष वैदिक ज्ञान की प्राप्ति कर उसके अनुसार निष्काम व फलों की इच्छा से रहित सभी प्राणियों के हितकारी कर्मों के आचरण सहित ईश्वर की उपासना से समाधि को सिद्ध करने अर्थात् ईश्वर का साक्षात्कार करने पर प्राप्त होता है। समाज में अपराध से मुक्त वातावरण हो, लोगों को उन्नति के अवसर मिलें, नागरिक सुखी व समृद्ध हों तथा राज्य विदेशी शत्रुओं से सुरक्षित रहे, ऐसे अनेक प्रयोजनों की व्यवस्था के लिए राज्य की स्थापना की जाती है। इस दृष्टि से रामराज्य अब तक हुए सभी राजाओं व राज्यों में श्रेष्ठ राज्य था। सज्जन पुरुष तो अनुशासन में रहते ही हैं परन्तु दुष्टों व अपराध प्रवृत्ति के स्त्री व पुरुषों को अनुशासन में रखने के लिए कठोर दण्ड का प्राविधान आवश्यक है। न केवल दण्ड का प्राविधान ही अपितु ऐसी व्यवस्था होनी चाहिये कि जिसमें कोई अपराधी बिना दण्ड के बच न सके। सभी अपराधियों को उनके अपराध के अनुरूप कठोर दण्ड देकर ही समाज को अपराधमुक्त किया जा सकता है। दण्ड व्यवस्था के पूर्ण प्रभावशाली होने के साथ देश के सभी स्त्री-पुरुषों व उनके बच्चों के लिए एक समान, सबके लिए अनिवार्य, निःशुल्क व आदर्श वैदिक शिक्षा प्रणाली होनी चाहिये जिससे सभी बच्चों व नागरिकों को अच्छे संस्कार मिले। आजकल की हमारे देश की व्यवस्था में यह उत्तम बातें नहीं हैं। अतः यह कहना व मानना पड़ता है। कि व्यवस्था में अनेक खामियां है जिनके सुधार की आवश्यकता है।

वेद क्या हैं, यह भी जानना आवश्यक हैं वेद ईश्वर प्रदत्त ज्ञान है जो सृष्टि के आरम्भ में उत्पन्न मनुष्यों में चार ऋषि अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा को ईश्वर द्वारा इन ऋषियों की आत्मा में प्रेरणा द्वारा स्थापित किया गया था। इस ज्ञान से ही संसार की प्रथम पीढ़ी के मनुष्यों का तिब्बत में जीवन निर्माण हुआ और नई पीढ़ियों ने जन्म लेकर न केवल जनसंख्या की वृद्धि की अपितु जनसंख्या वृद्धि व कुछ लोगों के यायावरी स्वभाव के कारण यह संसार वेदानुयायी आर्यों द्वारा बसाया गया। महाभारत काल तक वैदिक नियमों व इनके अनुसार बनाये गये ऋषियों के विधानों के आधार पर आर्य राजाओं ने संसार पर शासन किया। रामायण, महाभारत एवं महर्षि दयानन्द के ग्रन्थ आदि इसके प्रमाण हैं। महर्षि दयानन्द ने चारों वेदों का गम्भीर अध्ययन करके इसको पूर्णतया सत्य व निर्भान्त पाया था और इसकी प्रामाणिकता को तर्क व युक्तियों से सिद्ध किया। उन्होंने ऋग्वेद का आंशिका एवं यजुर्वेद का संस्कृत व हिन्दी भाषा में भाष्य भी किया है। वेदों में देश के संचालन के लिए साम्प्रदायिक व मजहबी बातों से रहित शुद्ध सत्य व न्याय पर आधारित विधान दिये गये है जो भारत सहित संसार के सभी देशों के लिए माननीय हैं। वेदों से दूर जाने के कारण ही अतीत में भारत की दुर्दशा हुई और आज संसार में सर्वत्र जो अशान्ति, भय, हिंसा व अन्याय का वातावरण है उसका प्रमुख कारण भी संसार का वेदों से दूर जाना है।

महर्षि दयानन्द ने १० अप्रैल, १८७५ को वेदों के प्रचार व प्रसार हेतु मुम्बई में आर्यसमाज की स्थापना की थी। अज्ञान, अन्धविश्वास, पक्षपात, अन्याय, अत्याचार-शोषण-असमानता आदि को दूर कर संसार में वेदानुरूप ईश्वर की सच्ची पूजा, पर्यावरण की शुद्धि सहित सभी नागरिकों को सद्ज्ञान व श्रेष्ठ संस्कारों से संयुक्त करना उनका मुख्य उदेद्श्य था। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए उन्होंने व उनके आर्यसमाज के अनुयायियों ने जो पुरुषार्थ किया है, वह इतिहास के पन्नों पर स्वर्णिम अक्षरों में अंकित है। उनके विचारों, मान्यताओं व सिद्धान्तों का सारे संसार पर प्रभाव पड़ा परन्तु बहुत सी बातें लोगों की अल्पज्ञता, अज्ञानता, स्वहित आदि अनेक कारणों से आज भी बनी हुई हैं। इसके लिए आर्यसमाज को अपने गुरूकुल में वेदों के आधुनिक विद्वान तैयार करने चाहिये जो न केवल संसार की सभी समस्याओं के व्यवहारिक वैदिक समाधान दे सकें। अपितु विश्व में वेदों का अपूर्व रीति से प्रभावशाली प्रचार भी करें जिससे कि एक ईश्वर, एक विचारधारा, एक सिद्धान्त व मान्यता, अन्याय - शोषण - हिंसा रहित समाज का निर्माण किया जा सके। यही आर्यसमाज का उद्देश्य, परम्परा, कार्य व प्रचार की दिशा है।

हमारे देश में गणतन्त्र प्रणाली है जो कि अन्य प्रचलित प्रणालियां से श्रेष्ठ है। अनेक प्रावधान ऐसे भी हैं जिनका दुरूपयोग किया जाता है जिससे समाज में सामाजिक व आर्थिक असमानता अत्यधिक बढ़ गई है। इस देश में ऐसे भी लोग हैं जिनको रात दिन काम करने के बाद भी न भर पेट भोजन मिलता है, अच्छे वस्त्रों, निजी घर, उच्च शिक्षा की तो बात ही क्या है?गणतन्त्र प्रणाली में सबको एक समान, निःशुल्क व अनिवार्य शिक्षा का प्रबन्ध होना चाहिये। ब्रह्मचर्य व संयम पूर्ण जीवन की प्रतिष्ठा होनी चाहिए। मांसाहार, धूम्रपान, मदिरापान व नशा आदि पूर्ण प्रतिबन्धित होने चाहिये। गोहत्या पर पूर्ण प्रतिबन्ध ही न हो अपितु गोसंवर्धन के लिए अनुसंधान केन्द्रों सहित गोपालन को प्रोत्साहित किया जाना चाहिये। जिससे देश में दुग्ध व दुग्ध उत्पाद प्रचुरता से सर्वसुलभ हो सके। गाय सहित सभी पशुओं के मांसाहारार्थ वध पर पूर्ण प्रतिबन्ध ही न हो अपितु ऐसा करने वालों को दण्डित भी किया जाना चाहिये। पशुओं की हत्या हिंसात्मक कार्य है और यह अमानवीय व्यवहार है। हम समझते हैं धर्म सद्गुणों को धारण करने व उनके अनुसार व्यवहार करने को कहते हैं, अतः कोई भी धर्म अकारण व भोजनार्थ पशु की हत्या की अनुमति नहीं दे सकता। सारे देश में सरकार की ओर से वेदों की अनिवार्य शिक्षा की व्यवस्था भी होनी चाहिये। स्त्रियों का आदर व सम्मान होना चाहिये और सभी स्त्री-पुरुष नागरिकों को वैदिक संस्कृति के अनुसार आचरण - व्यवहार करने सहित आदर्श वेशभूषा को धारण करना चाहिये। जन्मना जातिवाद प्रतिबन्धित हो व पूर्णतया समाप्त हों। दलितों व पिछड़ों को शिक्षा में विशेष सुविधायें मिलनी चाहिये जिसका आधार उनकी सामाजिक व आर्थिक स्थिति होनी चाहिये। समाज में कोई दलित व पिछड़ा हो ही न अपितु सभी सामाजिक व आर्थिक दृष्टि से उन्नत हो और सभी में परस्पर प्रेम व भातृभाव विकसित अवस्था में होना चाहिये। असत्य आचरण, अपरिग्रह व सच्चरित्रता को सामाजिक जीवन में अधिक महत्व दिया जाना चाहिये और इसके विपरीत की उपेक्षा होनी चाहिये। समाज में आध्यात्मिकता का विकास व विस्तार और साम्प्रदायिक विचारधारा पर अंकुश व प्रतिबन्ध होना चाहिये। जब यह व ऐसे सभी लक्ष्य प्राप्त हो जायंगे तभी हमारी गणतन्त्र प्रणाली सफल मानी जा सकती है। क्या हम गणतन्त्र प्रणाली के आदर्श इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए काम कर रहें हैं, इस पर हमें गणतंत्र के दिन विचार करना चाहिये। इन सभी प्रश्नों पर विचार करना व इनका हल ढूंढ़ना ही गणतन्त्र दिवस को मनाना हमें प्रतीत होता है। इसी के साथ हम इस लेख को विराम देते हैं।

प्रश्नोत्तर

श्री हरिश्चन्द्र वर्मा 'वैदिक'

प्रश्न- क्या ईश्वर निराकार है ?यदि उसका कोई आकार नहीं है तो वह कैसे शक्तिमान और सामर्थ्यवान हो सकता है?ऐसा लगता है कि ईश्वर एक विश्वास है।

उत्तर - निराकार उसे कहते हैं जिसका कोई स्थूल आकार न हो - जैसे चैतन्य ! ईश्वर तो प्रकृति से भी सूक्ष्म है। वह परमाणुओं का कोई कण भी नहीं परन्तु प्रत्येक कणों में जो गति एवं गुण होते हैं उन्हें आदि सृष्टि के पहले ही ईश्वर की तपः एवं ऋत शक्ति से प्राप्त हो गई थी, उसके पहले वे सारे कण अद्रव्यमान एवं निष्क्रिय थे। जब उन्हें शक्तियाँ प्राप्त हुई तब वे विधि विज्ञान पूर्वक नियम से एकत्रित होकर विभिन्न प्रकार के सृष्टियों के कार्य-कारण बनने लगे।

ऋषि दयानन्द ने ईश्वर, जीव और प्रकृति को सृष्टियों का मूलतत्व माना है। प्रकृति को सृष्टि रचने की सामग्री 'उपादान कारण' उससे सूक्ष्म जीवात्मा को शरीरधारी प्राणियों का अधिष्ठाता साधारण कारण और उससे भी अतिसूक्ष्म प्रकृति के परमाणुओं से परे, अग्नि के समान व्यापक सर्व सामर्थ्यवान परमेश्वर को निमित्त कारण कहा गया है। ईश्वर एक ऐसा महान तत्त्व है। जिसमें सर्वज्ञता का भी गुण है। उपनिषद एवं वेद ने ईश्वर को आत्मा से भी सूक्ष्म माना ह।

देखिये वेद भी कहता है - अमी षतस्तदा भरेन्द्र ज्याय : कनीयसः।

पुरुवसुहिं मघवन्त्सनादसि भरे-भरे व हव्यः।।

(ऋ. ७,३२,२४)

जो परमात्मा सूक्ष्म से सूक्ष्म, महान् से महान सनातन, (प्राण के समान) सर्वाधार, सर्वव्यापक और सबके द्वारा उपासना करने योग्य है, उसी का आश्रय सब लोग करें।

यह सभी जानते हैं कि एटम का कण जितना सूक्ष्म होता है उतना ही शक्तिशाली होता है। उसी प्रकार परमेश्वर सर्वशक्तिमान और सर्व उत्तम गुणों से सम्पन्न इसलिये है कि उससे सूक्ष्म कोई भी नहीं है, प्रकृति भी नहीं। इसलिये वह सब में प्राण के समान व्याप्तमान है, तभी तो उसके प्रतिभा रूपी नियम से प्रकृति के सारे कण क्रियाशील है (ये कण परमाणु एवं उससे भी सूक्ष्म होते हैं) उन्हीं से जिनको परमेश्वर ने अपनी नियम शक्तियों द्वारा एकत्रित करके सारी सृष्टियों की रचना की है।

देखिये वेद प्रमाण - विश्वतश्चक्षुरुत विश्व तो मुखोविश्वतो बाहुरूत विश्वतस्यात्।
सं बाहुम्यांधमति सं पतत्रैर्धावा भूमी जनयन् देव एकः।। (यजु. १७.१६)

जो सूक्ष्म से सूक्ष्म, महान से महान आकार रहित, अनन्त सामर्थ्य वाला और सर्वव्यापक देव अद्वितीय परमात्मा है, वही अतिसूक्ष्म कारण प्रकृति से स्थूल कार्य जगत् को रचने और नष्ट करने में समर्थ है। जो उसकी उपासना को छोड़कर अन्य की उपासना करता है, उससे भिन्न संसार में अन्य कौन अभागा है?

देखिये चैतन्यता और ज्ञान निरवयव है, किन्तु मानव उसी के माध्यम से शिक्षा और विद्या से वैज्ञानिक बन जाता हैं तब नये-नय दूरदर्शन, कम्प्यूटर आदि यन्त्र एवं जल-थल-वायुयान का निर्माण कर देता है तात्पर्य यह कि मूलतत्त्व चैतन्यता में देखिये कितनी बड़ी शक्ति है जिसकी बुद्धि ने अपने शरीर साधनों एवं विभिन्न प्रकार के पदाथों से बड़े-बड़े पुल और कई मंजिला मकानों का निर्माण कर दिया है।

विज्ञान स्वरूप ईश्वर ने मानव मस्तिष्क का निर्माण क्यों किया ?इसलिये कि आत्मा अपने ज्ञातृत्व गुणों को उसके द्वारा सारे कार्यों को कर सके और सृष्टिकर्ता के रहस्यमयी रचनाओं को देखे, जाने और खोज करे कि पंचतत्व एवं सूर्य चन्द्रादि की रचना कैसे, कब और क्यों हुई?और एक विशेष बात यह है कि परमात्मा मानव जैसा न चेतन है, न अल्पज्ञ, न परिच्छिन्न और न अल्प सामर्थ्य वाला है। वह परमात्मा ज्ञान स्वरूप-सर्वज्ञ अति सूक्ष्म, प्राण के समान व्यापक और समर्थवान है वह किसी भी यन्त्र से दृष्टिगोचर होने वाला नहीं है, क्योंकि वह कोई प्रकृति कण नहीं है, किन्तु बुद्धिपूर्वक मानव का मस्तिष्क एवं ज्ञानेन्द्रियों, कर्मेन्द्रियों की रचना तथा उनके में स्वाभाविक ज्ञान के अलावा नैमित्तिक ज्ञान के लिये ऋषियों द्वारा वेद-विद्या और भाषा की रचनाओं को देखकर परमात्मा का ज्ञान होना स्वाभाविक है। प्रकाश की, पंचतत्वों की, चुम्बकीय ध्वनि तरंगों की, विद्युत की, ये सारे के सारे सृष्टि तंत्वों के सूक्ष्म से सूक्ष्म कणों की शक्तियाँ हैं जो सारे विश्व में क्रियाशील हैं। तभी तो आत्मा के योग से अपने जीवित शरीर में मनुष्य इन्द्रियों का केन्द्र मस्तिष्क के होने से उसके द्वारा विचार करता है, मन द्वारा मनन करता है, नेत्र द्वारा रूप देखता है, कान द्वारा सुनता है, त्वचा द्वारा स्पर्श का ज्ञान करता है, रसना द्वारा रसों को जानता और बोलता है, नाक द्वारा प्राणापान एवं गन्ध-सुगंध का बोध करता है।

चेतन, प्रेम, आनन्द, ममत्व, इच्छा, स्मरण और ज्ञानादि के कोई परमाणु नहीं होते। ये सब उनसे परे आत्मा के गुण हैं और आत्मा कोई जड़ कण नहीं है। वह अमिश्रित अति सूक्ष्म द्रव्य है, उसका परिवर्तन नहीं होता, पर उसकी गति अवश्य है क्योंकि वह सूक्ष्म शरीर से एक स्थूल शरीर को छोड़कर दूसरे शरीर को धारण करता है और आयु के अनुसार शरीर में रहकर अपने कर्मों को, मन, बुद्धि, मस्तिष्क और इन्द्रियों के साधनों द्वारा करता रहता है।

प्रश्न - कतिपय वैज्ञानिक जन 'आत्मा' को क्यों नहीं मानते, जबकि उसका अस्तित्व भी है?

उत्तर - वैज्ञानिक जन आध्यात्मिक विज्ञान के संबंध में अंधे है। (यदि वे लोग ईसाई धर्मग्रन्थों को छोड़कर, वैदिक ग्रंथों को देखते तो उन्हें ज्ञात हो जाता है कि वैदिक शास्त्र कितना विज्ञान संगत है) वे लोग केवल भौतिक जड़ कणों को ही मानते हैं और ईश्वरीय सृष्टि रहस्यों के खोज में लगे हुए हैं। उनको शायद पता है कि नहीं हम नहीं जानते पर यह सत्य है कि परमाणुओं के गर्भ में अनेक कणों के रहस्य छिपे हुए हैं, जिनकी खोज वे लोग जेनेवा में स्थापित महामशीन द्वारा कर रह हैं। अभी हाल ही में (न्यूट्रानों की टक्कर से) एक गॉडपार्टिकल, सृजनकारक कण का आविष्कार हुआ है, जो प्रकाश की गति से कई गुणा तीव्र है। उन लोगों का विश्वास है कि वही विशेष कण अन्य परमाणुओं को द्रव्यमान बनाया है, जिससे उन्होंने उसे भगवान का कण कह दिया है। इस प्रकार खोज करते रहेंगे और उनके सामने नये-नये तथ्य आते रहेंगे उस विशेष कण को भगवान का कण कह देना उचित नहीं, क्योंकि ईश्वर किसी का कण नहीं है।

वह सत्, चित्त आनन्द से युक्त, सबकी आत्माओं में सूक्ष्म प्राण के रूप में विद्यमान, सर्वव्यापक, सामर्थ्यवान सबका प्रकाशक और जो सर्वज्ञ गुणों से सम्पन्न है, वह प्रकृति से परे रहकर अपनी विशेष नियम शक्ति से विभिन्न प्रकार के परमाणुओं को द्रव्यमान बनाकर उन सबके द्वारा सारे ब्रह्मण्ड की रचना की है। योग दर्शन (१,२,७) में 'तस्यवाचकः प्रणवः' अर्थात परमात्मा को ओम प्रणव कहा गया है। इसलिये वह प्राणों का भी प्राण है। अतः उस प्रणव प्राणाधार को प्राण के रूप में बोध करते रहना चाहिए, इससे निर्बलता और चिन्ता तनाव दूर होते हैं। यदि वैज्ञानिक जन ईश्वर को नहीं मानते तो यह सारी सृष्टि की आदि उत्पत्ति कैसे किसी विद्या विज्ञान के द्वारा बनी?स्वयं तो बन नहीं सकती, परमाणु जड़ होते हैं - उनमें स्वयं का कुछ भी बनने का ज्ञान ही नहीं होता। इसलिये जब ईश्वरीय नियम की शक्ति उनमें प्रवेश हुई तभी उस ईश्वर के विद्या-विज्ञान द्वारा सारे विश्वादि की रचना होने लगी और हो रही है। और आत्मा का जहाँ तक प्रश्न है, तो उन्हें विचार करना चाहिये कि मानव उत्पत्ति के पूर्व, मानव का साँचा, उसके भीतर के सारे उपकरण, बाहर की दसों इन्द्रियाँ जिन सबका सम्बन्ध मस्तिष्क से है, इन सभी को कौन ऐसा महा वैज्ञानिक था, जिन्होंने आदि काल में अमैथुनी तरीके से जीवन शक्ति आत्माओं के योग से मानव आदि सारे शरीरधारी प्रणियों को उत्पन्न किया।

आज भौतिक विज्ञान की तरक्की से एक तरफ जहाँ आशीर्वाद प्राप्त हुआ है वहीं दूसरी तरफ अभिशाप भी बन गया है। उन्होंने मानव के चरित्र का निर्माण नहीं कर सका, विश्व शान्ति के लिये कोई मन्त्र नहीं बना सका। इसलिये टी.वी. चैनलों पर मॉडल सुन्दरी प्रतियोगिता एवं सिने जगत के नंगेपन से युवक-युवतियों का चरित्र नष्ट होता जा रहा है और वे भारतीय संस्कृति से दूर होते जा रहे हैं।

आज मानव, दानव बनकर शराब एवं काम क्रोध के नशे में बलात्कार, भ्रूणहत्या और हत्या कर रहा है। कुछ लोग तो हिंसक जानवर से भी बढ़ गये हैं। इसके अलावा आतंकवाद के चलते संसार की शान्ति भंग हो रही है। दूसरी तरफ कल-कारखाने चिमनियों के धुयें एवं गन्दगियों से, वायु और जल में प्रदूषण बढ़ता ही जा रहा है। वैज्ञानिकों ने खाद्यान्न पदार्थों को अधिक उत्पादन के लिये उन्हें अप्राकृतिक हाइब्रिड विषाणु युक्त एवं स्वादहीन बना दिया है, इसलिये आज सभी लोग किसी न किसी रोग से विशेषकर पेट के रोगों से ग्रस्त हैं।

इन सबके अतिरिक्त विज्ञान के अभिशाप ने ऐसे-ऐसे एटम आदि बमों का निर्माण कर दिया है कि यदि उनका प्रयोग हुआ तो सारे संसार का सर्वनाश हो जायेगा और जब धरती मानव एवं सारे प्राणियों से शून्य हो जायेगी तब फिर कभी भी, कोई भी बड़े से बड़े वैज्ञानिक तृण एवं मनुष्य को पुनः उत्पन्न नहीं कर सकेगा। इसलिये उन ब्रह्मास्त्रों को नष्ट कर दें अथवा अन्य कार्यों में उन सबका प्रयोग करें। ऐसा निरस्त्रीकरण संसार के सभी राष्ट्रों को मिलकर करना चाहिये। क्योंकि वृक्ष-वनस्पतियां और सारे प्राणियों तथा सर्वोत्तम मानव के पूर्वजों को अमैथुनी तरीके से ईश्वरीय शक्तियों ने (हजारों वर्षों में अनेक प्रकार के रासायनिक तत्वों एवं पंच सूक्ष्म भूतों, सूर्य के प्रकाश और सूक्ष्म शरीर के साथ आत्माओं के योग से) सृष्टि की आदि में एक ही बार उत्पन्न की थी, इसलिये इस स्वर्ग जैसे संसार को नष्ट न होने दें। सभी राष्ट्र परस्पर मैत्री भाव से रहें और प्राकृतिक दैवी शक्तियों को प्रदूषणों से बचाने का उपाय करें।

आत्मा का स्थान मस्तिष्क है और प्राण का स्थान हृदय है। ईश्वरीय विद्या अर्थात साँचा के अनुसार भ्रूण में सूक्ष्म प्राण के द्वारा जब हृदय (फेफड़ा) और मस्तिष्क बनने लगता है तब उस सूक्ष्म शरीर में विद्यमान (मौलिक प्राण से भी सूक्ष्म आत्मा का मस्तिष्क से सम्बन्ध) (निर्धारित आयु के अनुसार) हो जाता है। गर्भ के प्रथम अवस्था में जीव सुषुप्ति में रहता है। जब उसके सारे अंग बन जाते है, तब वह स्वप्नावस्था में होता है और जब नौ मास के बाद उसका जन्म होता है तब जागृत अवस्था में आ जाता है और जब रोता है तब शिशु का मौलिक प्राण बाहर के वायु से ऑक्सीजन को ग्रहण करने लगता है। यदि आत्मा नहीं है तो जैसे बिगड़े हुए मशीन को चालू कर दिया जाता है, वैसे ही मृत शरीर को भी रक्त और ऑक्सीजन आदि देकर बड़े-बड़े डाक्टर उसे क्यों नही पुनर्जीवित कर देते ?

मु.पो. मुरारई, जिला वीरमूम

पंजी०सं० आर.एन.आई.-२४४१/५७ - आर्यमित्र ०६ व ५ री, २०१६ पोस्टल रजि.जी.पी.ओ. लखनऊ/एन.पी.-१४-२०१३-१५

एक प्रति ₹ २.००

आर्य मित्र

नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ दूर./फैक्स:०५२२-२२८६३२८
प्रधान-०६४१२६७८५७१, मंत्री-०६८३७४०२१६२, सम्पादक-६५३२७४६६००
ई.मेल-apsabhaup86@gmail.com

सेवा में,

.....

.....

....

वैदिक पुत्री पाठशाला इण्टर कालेज नई मण्डी, मुजफ्फर नगर में वेद पारायण यज्ञ एवं जिला आर्य प्रतिनिधि सभा मुजफ्फर नगर का कार्यकर्ता सम्मेलन दि. 23, 24 व 25 को सोल्लास सम्पन्न

सम्मेलन की अध्यक्षता श्री देवेन्द्रपाल वर्मा प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. तथा मुख्य अतिथि स्वामी आर्यवेश प्रधान सार्वदेशिक सभा देहली तथा विशिष्ट अतिथि स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. थे। यज्ञ की ब्रह्मा आचार्या प्रियंवदा गुरूकुल नजीबाबाद थे।

श्री देवेन्द्रपाल वर्मा ने अपनी अध्यक्षीय सम्बोधन में बालिकाओं की शिक्षा में वैदिक पुत्री पाठशाला इण्टर कालेज नई मंडी, मुजफ्फर नगर के अनुपमेय सहयोग की सराहना की उन्होंने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने बालिकाओं को सुशिक्षित बनाने के लिए बालिकाओं के विद्यालय खोलने का संदेश दिया था। मुजफ्फर नगर में यह वैदिक पुत्री पाठशाला इं. का. बालिकाओं की सुशिक्षा में अग्रकाण्य है। इसके लिए प्रबन्धक श्री अरविन्द कुमार आर्य तथा विद्यालय अध्यक्ष ला. मूलचन्द्र सर्राफ एवं भाग सिंह, ठा. शिवपाल सिंह, आर.पी. शर्मा, श्रीमती नीलम ढीगरा डायरेक्टर, श्रीमती सन्तोष गोयल एवं प्रधानाचार्या निरूपमा शर्मा हैं।

अरूण कुमार आर्य, डॉ. ओमपाल, श्री सुशील कुमार नत्थू सिंह अत्यधिक धन्यवाद के पात्र हैं। मुख्य अतिथि आर्यवेश तथा विशिष्ट अतिथि स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती एवं आचार्य प्रियंवदा जी ने बालिकाओं को वैदिक शिक्षा देने पर बल दिया। उत्सव में लगभग 2000 बालिकाओं ने भाग लेकर विद्यालय का गौरव बढ़ाया।

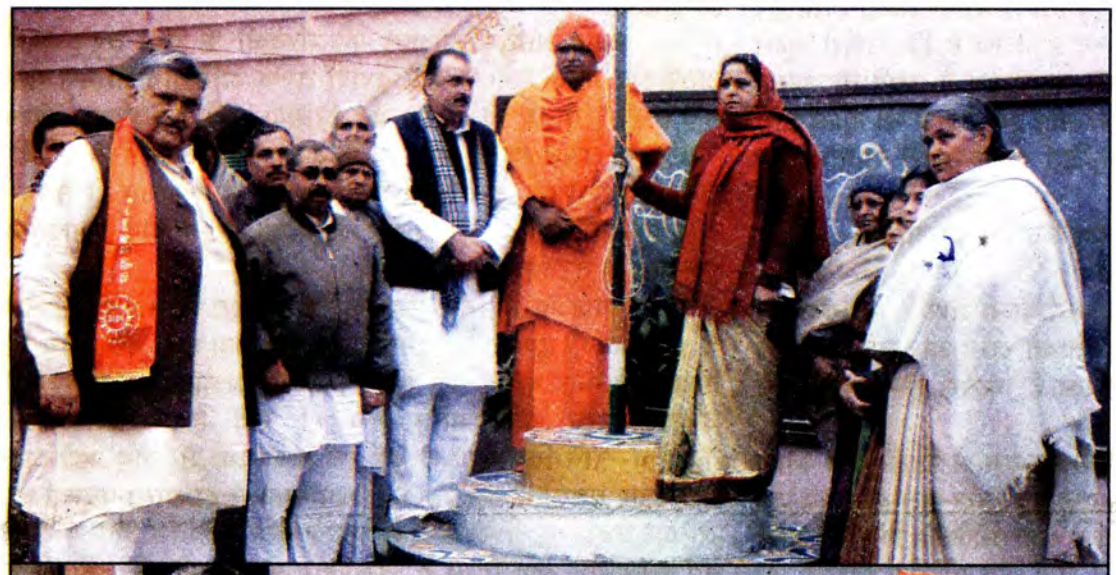

स्वामी–आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश सम्पादक–आचार्य वेदव्रत अवस्थी, मुद्रक प्रकाशक–श्री सियाराम वर्मा, भगवानदीन आर्य भास्कर प्रेस; 5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में शुभम् आफ़्सेट प्रिंटर्स, कैसरबाग, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित

लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है–सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा।